

अथर्ववेद

काण्ड २

सूक्त १८

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaanda 2

Sookta 18

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ऋषि चातन के माध्यम से ईश्वर हमें मोक्ष में बाधक मन के विकारों के विषय में उपदेश दे रहे हैं। क्रूरता, दान न देना, बिना कारण बोलते रहना, शरीर में रोग आदि आन्तरिक शत्रु हमारे अपवर्ग में बाधक हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि वह हमें इन शत्रुओं पर अंकुश लगाने का सामर्थ्य प्रदान करें।

प्रथम मन्त्र में मन के विकारों का नाश करने के लिए प्रार्थना है।

चातन ऋषिः। अग्निर्देवता। १८ अक्षराणि। द्विपदा साम्नी बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः।

भ्रातृव्यक्षयणमसि भ्रातृव्यचातनं मे दाः स्वाहा ॥१॥

अथर्व २:४:१८:१

भ्रातृव्यऽक्षयणम्। असि। भ्रातृव्यऽचातनम्। मे। दाः। स्वाहा ॥१॥

हे ईश्वर! आप (भ्रातृव्य) शत्रुओं का (क्षयणम्) नाश करने वाले (असि) हो। मुझे (मे) मेरे (भ्रातृव्य) मन के शत्रुरूपी विकारों को (चातनम्) नष्ट करने का सामर्थ्य (दाः) प्रदान करें। यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे। “भ्रातृव्य” शब्द का अर्थ भाई का पुत्र है; इसमें मन को भाई की और उसमें उत्पन्न विकारों को भाई के पुत्रों की उपमा दी गई है।

दूसरे मन्त्र में हमारे अधिकार क्षेत्र का उलंघन करने वाले शत्रुओं का नाश करने के लिए प्रार्थना है।

चातन ऋषिः। अग्निर्देवता। १८ अक्षराणि। द्विपदा साम्नी बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः।

सपत्नक्षयणमसि सपत्नचातनं मे दाः स्वाहा ॥२॥

अथर्व २:४:१८:२

सपत्नऽक्षयणम्। असि। सपत्नऽचातनम्। मे। दाः। स्वाहा ॥२॥

हे ईश्वर! आप (सपत्न) अधिकार क्षेत्र का उलंघन करने वाले शत्रुओं का (क्षयणम्) नाश करने वाले (असि) हो। (मे) मुझे मेरे (सपत्न) अधिकार क्षेत्र में घुस आने वाले शत्रुओं को (चातनम्) नष्ट करने का सामर्थ्य (दाः) प्रदान करें। यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे। “सपत्न” शब्द का अर्थ स्वामित्व को सांझा करने वाले, जैसे शत्रु रूपी रोग हमारे शरीर को अपना घर बनाने लगते हैं।

तीसरे मन्त्र में हमारी दान न देने की वृत्ति का नाश करने के लिए प्रार्थना है।

चातन ऋषिः। अग्निर्देवता। १७ अक्षराणि। द्विपदा निचृद् साम्नी बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः।

अरायक्षयणमस्यरायचातनं मे दाः स्वाहा ॥३॥

अथर्व २:४:१८:३

Synopsis

In this composition through sage Chaatana, God is preaching about the vices that hinder our upliftment towards moksha. The various vices that take us away from righteous conduct are cruelty, meanness, talking incessantly, timidity and various physical and mental ailments. We are praying to the almighty to grant us capabilities so that we could keep these enemies under check.

In the first mantra the sage offers prayers for destruction of evil tendencies in our mind. **ṛiṣhiḥ** chaatanah, **devataa** agniḥ, **vowels** 18, **chhandah** dvipadaa saamnee bṛihatee, **svarah** madhyamah.

1. bhraatrivyakshayaṇamasi bhraatrivyachaatanam me daahḥ svaahaa.

Atharva 2:4:18:1

bhraatrivya-kshayaṇam asi bhraatrivya-chaatanam me daahḥ svaahaa.

O God! You (asi) are the (kshayaṇam) destroyer of the (bhraatrivya) evil. Please (daahḥ) grant (me) me as well, the capacity for (chaatanam) destroying the (bhraatrivya) evil tendencies in my mind. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the second mantra the sage offers prayers for destruction of enemies who encroach on our territories.

ṛiṣhiḥ chaatanah, **devataa** agniḥ, **vowels** 18, **chhandah** dvipadaa saamnee bṛihatee, **svarah** madhyamah.

2. sapatnakshayaṇamasi sapatnachaatanam me daahḥ svaahaa.

Atharva 2:4:18:2

sapatna-kshayaṇam asi sapatna-chaatanam me daahḥ svaahaa.

O God! You (asi) are the (kshayaṇam) destroyer of the (sapatna) encroachers. Please (daahḥ) grant (me) me as well, the capacity for (chaatanam) destroying the (sapatna) encroachers on my domain, for example the diseases encroaching on my body. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the third mantra the sage offers prayers for destruction of our uncharitable tendencies.

ṛiṣhiḥ chaatanah, **devataa** agniḥ, **vowels** 17, **chhandah** dvipadaa nichṛid saamnee bṛihatee, **svarah** madhyamah.

3. araayakshayaṇamasyaraayachaatanam me daahḥ svaahaa.

Atharva 2:4:18:3

अ॒राय॑ऽक्षय॑णम् । अ॒सि॒ । अ॒राय॑ऽचा॒तन॑म् । मे॒ । दाः॑ । स्वाहा॑ ॥३॥

हे ईश्वर! सदैव देते रहने वाले आप (अराय) न देने की वृत्ति का (क्षयणम्) नाश करने वाले (असि) हो । (मे) मुझे भी अपनी (अराय) न देने की वृत्ति को (चातनम्) नष्ट करने का सामर्थ्य (दाः) प्रदान करें । यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे ।

चौथे मन्त्र में का हमारी पैशाचिक वृत्तियों का नाश करने के लिए प्रार्थना है ।

चातन ऋषिः । अग्निर्देवता । १८ अक्षराणि । द्विपदा साम्नी बृहती छन्दः । मध्यमः स्वरः ।

पि॒शा॒च॒क्षय॑णम॒सि पि॒शा॒च॒चा॒तन॑ मे॒ दाः॑ स्वाहा॑ ॥४॥

अथर्व २:४:१८:४

पि॒शा॒च॒क्षय॑णम् । अ॒सि॒ । पि॒शा॒च॒चा॒तन॑म् । मे॒ । दाः॑ । स्वाहा॑ ॥४॥

हे ईश्वर! आप (पिशाच) पिशाचों का (क्षयणम्) नाश करने वाले (असि) हो । (मे) मुझे भी अपनी (पिशाच) पैशाचिक वृत्तियों को (चातनम्) नष्ट करने का सामर्थ्य (दाः) प्रदान करें । यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे । “पिशाच” शब्द का अर्थ मांसभक्षी है; काम क्रोध, शोक, ईर्ष्या आदि पिशाच वृत्तियाँ हैं ।

पाँचवे मन्त्र में हमारी अशुभ, अभद्र, अपशब्द व अधिक बोलने की वृत्ति का नाश कर मुनि बनाने के लिए प्रार्थना है ।

चातन ऋषिः । अग्निर्देवता । १८ अक्षराणि । द्विपदा साम्नी बृहती छन्दः । मध्यमः स्वरः ।

स॒दा॒न्वा॒क्षय॑णम॒सि स॒दा॒न्वा॒चा॒तन॑ मे॒ दाः॑ स्वाहा॑ ॥५॥

अथर्व २:४:१८:५

स॒दा॒न्वा॒क्षय॑णम् । अ॒सि॒ । स॒दा॒न्वा॒चा॒तन॑म् । मे॒ । दाः॑ । स्वाहा॑ ॥५॥

हे ईश्वर! आप (सदान्वा) अभद्र वृत्तियों का (क्षयणम्) नाश करने वाले (असि) हो । (मे) मुझे भी अपनी (सदान्वा) असमाजिक व अव्यवहारिक वृत्तियों को (चातनम्) नष्ट करने का सामर्थ्य (दाः) प्रदान करें । यह (सु) शुभ वचन मेरी (आह) वाणी में (आ) सदा बना रहे । “सदान्वा” शब्द का अर्थ चीखना चिल्लाना, अपशब्द बोलना, गुप्त बातों को बिना कारण सार्वजनिक करना आदि समाज व राष्ट्र विरोधी व्यवहार में लिप्त होना है ।

Atharvaveda - Prapaathaka 3, Kaanda 2, Anuvaaka 4, Sookta 18

araaya-kṣhayaṇam asi araaya-chaatanam me daaḥ svaahaa.

O God! You are always giving and (asi) are the (kṣhayaṇam) destroyer of the (araaya) uncharitable. Please (daaḥ) grant (me) me as well, the capacity for (chaatanam) destroying the (araaya) uncharitable tendencies. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the fourth mantra the sage offers prayers for destruction of our inhumane tendencies. **ṛiṣhiḥ** chaatanah, **devataa** agniḥ, **vowels** 18, **chhandah** dvipadaa saamnee bṛihatee, **svarah** madhyamah.

4. pishaachakṣhayaṇamasi pishaachachaatanam me daaḥ svaahaa.

Atharva 2:4:18:4

pishaacha-kṣhayaṇam asi pishaacha-chaatanam me daaḥ svaahaa.

O God! You (asi) are the (kṣhayaṇam) destroyer of the (pishaacha) inhumane. Please (daaḥ) grant (me) me as well, the capacity for (chaatanam) destroying the (pishaacha) inhumane tendencies, for example eating meat and vices like anger, desire, jealousy etc. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!

In the fifth mantra the sage offers prayers for destruction of our tendency to talk incessantly.

ṛiṣhiḥ chaatanah, **devataa** agniḥ, **vowels** 18, **chhandah** dvipadaa saamnee bṛihatee, **svarah** madhyamah.

5. sadaanvaakṣhayaṇamasi sadaanvaachaatanam me daaḥ svaahaa.

Atharva 2:4:18:5

sadaanvaa-kṣhayaṇam asi sadaanvaa-chaatanam me daaḥ svaahaa.

O God! You (asi) are the (kṣhayaṇam) destroyer of the (sadaanvaa) unethical and anti-social. Please (daaḥ) grant (me) me as well, the capacity for (chaatanam) destroying the (sadaanvaa) tendencies to engage in unscholarly and insensible speech. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!